बी.ए. पार्ट – II परीक्षा – 2013

राजस्थानी

परीक्षा योजना

दो प्रश्न पत्र	न्यूनतम उत्तीर्णांक 72	अधिकतम अंक – 200
प्रथम प्रश्न पत्र	समय : 3 घंटे	अंक – 100
द्वितीय प्रश्न पत्र	समय : 3 घंटे	अंक – 100

प्रथम प्रश्न पत्र – मध्यकालीन राजस्थानी काव्य

समय – 3 घंटे **पूर्णांक – 100**

पाठ्यपुस्तकें एवं अध्ययन क्षेत्र

पाठ्य पुस्तकें

1. नागदमण : सांयाजी झूला (सं.) मूलचन्द प्राणेश
2. राजिया रा दूहा : किरपाराम (सं.) नरोत्तमदास स्वामी

विशिष्ट अध्ययन

1. मध्यकालीन राजस्थानी काव्य का इतिहास
   काव्यगत प्रवृत्तियां – भक्ति एवं नीति परक साहित्य – प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार।
2. विविध काव्यरूपों का परिचय ।

प्रश्न पत्र एवं अंक योजना

इकाई 1

भाग अ : अतिलघूतरात्मक प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को समेटते हुए – कोई आन्तरिक विकल्प नही (10 प्रश्न : शब्द सीमा 15 शब्द अधिकतम) 1x10 = 10 अंक

भाग ब : दो लघूतरात्मक प्रश्न – दोनों पाठ्यपुस्तकें में से एक-एक प्रश्न कोई आंतरिक विकल्प नही (2 प्रश्न :शब्द सीमा 100 शब्द प्रत्येक प्रश्न) 2x 5 = 10 अंक

इकाई 2

कुल चार व्याख्याएं- दोनो पाठ्यपुस्तकों पर आधारित
दो व्याख्याएं ('नागदमण')में से आन्तरिक विकल्प सहित
दो व्यख्याएं (राजिया रा दुहा) में से आन्तरिक विकल्प सहित 4x 5 = 20 अंक

इकाई 3

नागदमण से संबंधित आलोचनात्मक प्रश्न आन्तरिक विकल्प सहित
(अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द) 20 अंक

इकाई 4

राजिया रा दूहा से संबंधित आलोचनात्मक प्रश्न – आन्तरिक विकल्प सहित
(अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द) 20 अंक

इकाई 5

भाग 'अ' मध्यकालीन राजस्थानी काव्य : विकास एवं परम्परा, भक्ति एवं नीति साहित्य, प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार : एक परिचात्मक प्रश्न आन्तरिक विकल्प सहित
(शब्द सीमा : 200 शब्द) 1x 10 = 10 अंक

भाग 'ब' विविध काव्य रूप : महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, परिचयात्मक प्रश्न – आन्तरिक विकल्प सहित (शब्द सीमा : 200 शब्द) 10 अंक

पाठ्यपुस्तकें :

1. नागदमण : सांयाजी झुला : (सम्पादक) मूलचन्द प्राणेश ।
   प्रकाशक : भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर ।
2. 'राजिया रा दूहा : किरपाराम : (सम्पादक) नरोत्तमदास स्वामी
   प्रकाशक : सस्ता साहित्य मण्डल, बीकानेर ।

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थानी काव्य की गौरवपूर्ण परम्परा : अगरचदं नाहटा राधाकृष्ण प्रकाशक : दिल्ली ।
2. परंपरा (शोध पत्रिका) : राजस्थानी मध्यकाल विशेषांक, प्रकाशक : राजथानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर ।
3. काव्य के रूप : डॉ. गुलाबराय
4. समीक्षा सिद्वान्त : डॉ. रामप्रकाश ।

द्वितीय प्रश्न पत्र – मध्यकालीन राजस्थानी गद्य

समय – 3 घंटे **पूर्णांक – 100**

पाठ्यपुस्तकें एवं अध्ययन क्षेत्र

पाठ्य पुस्तकें

1. राजस्थानी वात संग्रह : (सं.) डॉ. मनोहर शर्मा
   (वात संख्या : 2, 7, 15, 20, 21, 23, 29, 32, 33, 35, 36, 37, 44, 46, 48 केवल)
2. कहवाट विलास : (सं.) डॉ. सौभाग्यसिंह शेखावत एवं डॉ. देव कोठारी

विशिष्ट अध्ययन

1 मध्यकालीन राजस्थानी गद्य साहित्य का इतिहास 5 विकास एवं परम्परा ।
2 मध्यकालीन गद्य विघाओं का संक्षिप्त परिचय ।
प्रकाशक : साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

इकाई 1

भाग अ : अतिलघूतरात्मक प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को समेटते हुए – कोई आन्तरिक विकल्प नही
(10 प्रश्न : शब्द सीमा 15 शब्द अधिकतम) 1x10 = 10 अंक

भाग ब : दो लघूतरात्मक प्रश्न – दोनों पाठ्यपुस्तकें में से एक-एक प्रश्न कोई आंतरिक विकल्प नही (2 प्रश्न :शब्द सीमा 100 शब्द प्रत्येक प्रश्न) 2x 5 = 10 अंक

इकाई 2

कुल चार व्याख्याएं- दोनो पाठ्यपुस्तकों पर आधारित
दो व्याख्याएं ('राजस्थानी वात संग्रह) आन्तरिक विकल्प सहित दो व्याख्याएं (कहवाट विलास) आन्तरिक विकल्प सहित 4x 5 = 20 अंक

इकाई 3

राजस्थानी वात संग्रह पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न आन्तरिक विकल्प सहित
(अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द) 20 अंक

इकाई 4

'कहवाट विलास' पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न – आन्तरिक विकल्प सहित
(अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द) 20 अंक

इकाई 5

भाग 'अ' मध्यकालीन गद्य साहित्य : विकास एवं परम्परा, प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार : एक प्रश्न आन्तरिक विकल्प सहित
(शब्द सीमा : 200 शब्द) 1x 10 = 10 अंक

भाग 'ब' मध्यकालीन गद्य विधाएं – परिचयात्मकम (वात, ख्यात, दवावैत, वचनिका, टब्बा, टीका, टिप्पण, वंशावली आदि) 10 अंक

पाठ्यपुस्तकें :

1. राजस्थानी वात संग्रह : (सं.) डॉ. मनोहर शर्मा ।
   प्रकाशक : साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।
   (वात संख्या : 2, 7, 15, 20, 21, 23, 29, 32, 33, 35, 36, 37, 44, 46, 48 केवल)
2. कहवाट विलास : (सं.) डॉ. सौभाग्यसिंह शेखावत एवं डॉ. देव कोठारी
   प्रकाशक : साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर ।

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

राजस्थानी गद्य साहित्य : उद्भव और विकास : डॉ. शिवस्वरूप शर्मा

नोट : प्रथम प्रश्न पत्र में उल्लेखित अभिप्रस्तावित गंथ इस पत्र के लिए भी उपयोगी है।